रचनात्मक लेखन क्या होता है? क्या यह सृजनात्मक लेखन से अलग है ?

रचनात्मक लेखन में लेखक को विषय की पूरी जानकारी होती है।व उससे संबंधित तथ्यों को एकत्र करता है और उसको वह अपने शब्दों में लिखता है। वह उस विषय को कितनी रोचकता या नीरसता से लिखता है यह उसके लेखन पर निर्भर करेगा। कि पढ़ने वाले के सामने उन दृश्यों को जीवंत कर सकेगा या नहीं। रचनात्मक लेखन में एक ही विषय पर बहुत लोगों के विचार अलग-अलग होते है। जैसे :- Quora पर पूछे गए प्रश्न पर उसके अनेक उत्तरों का मिलना,रचनात्मक लेखन है।

सृजनात्मक लेखन को समझने से पहले **सृजन शब्द का अर्थ समझना होगा। सृजन मतलब उत्पत्ति, जन्म, अविष्कार या उस लेखन के तथ्य कहीं न हों। जो लेखक की सिर्फ अपनी सोच हो।**

जैसे :- बहुत से लोग ब्लॉग लिखते है या कविताएं और कहानियाँ लिखते है वो उनकी अपनी सोच है। मैं खुद एक ब्लॉग लिखती हूँ, जिसमें रचनात्मक व सृजनात्मक दोनों तरह के लेख लिखती हूँ।जब इतिहास जैसे विषय पर लिखती हूँ तो उसके तथ्य एकत्र करती हूँ जिससे लेखन में सहायता मिल सके। वहीं सृजनात्मक लेखन में कविताएं, कहानियां, यात्रा-विवरण व मेरे अपने विचार होते हैं।जिसके विषय और लेखन मेरी अपनी कल्पनाओं पर आधरित होता है।

इन दोनों ही लेखन में यही मुख्य अंतर है :-

रचनात्मक लेखन में विषय-सामग्री प्राप्त होती है जिसे अपने तरीके से लिखना होता है।

सृजनात्मक लेखन में विषय-सामग्री बिल्कुल नहीं होती है। जो होता है वो है सिर्फ अपनी सोच ।

- **रचनात्मक लेखन के** लिए जरूरी है कि हमें भाषा और विषय के बारे में अच्छी खासी जानकारी हो. रचनात्मक लेखन में आपको पहले से ही पता रहता है कि आपको किस परिधि के भीतर रह कर लिखना है और किस वर्ग विशेष के लिए लिखना है. जैसे किसी विज्ञापन, फ़िल्म या सीरियल की कहानी लिखना. आपको रचनात्मक लेखन के लिए उस समय के प्रचलित रिवाजों और हालातों की जानकारी होनी चाहिए. यदि आपको लिखने का शौक है तो आप अपने प्रयास या प्रशिक्षण द्वारा रचनात्मक लेखन सीख सकते हैं एवं इसमें कुशलता प्राप्त कर सकते हैं.

सृजनात्मक लेखन बाहर घटने वाली घटना नहीं बल्कि भीतर होने वाला निर्माण है जो सहज ही ह्रदय से उमड़ कर बाहर की ओर आ जाता है. इसमें कल्पनाओं की ऊंची उड़ान है कभी तो कभी डुबकी है कल्पनाओं की गहराइयों में. जो ह्रदय ने कहा वही लिख डाला. कोई समझौता नहीं. कोई मोल भाव नहीं. कोई परिधि का बंधन नहीं **बल्कि सभी परिधियों को लांघ कर कहीं दूर से ख्याल लाकर उन्हें लफ़्ज़ों से सजा देना ही सृजनात्मक लेखन है.** यह पूरी तरह से एक प्राकृतिक घटना है. या तो कुछ लिखा जाता है या बिल्कुल कुछ नहीं. कवि की कल्पना से लिखी हुई कविता सृजन है. कोई शेर, कोई ग़ज़ल, कोई नज़्म जो खुद ब खुद जन्म ले ले दिल की गहराईयों में तो वो सृजनात्मक लेखन है.

इसे थोड़ा बहुत इसलिए समझ पाया हूँ क्योंकि पिछले 35 सालों में जितने भी शेर, ग़ज़लें और नज़्म लिखे हैं वो सब **भीतर से ही आए हैं. कभी भी कोशिश नहीं की कि कुछ लिखना है.**

सृजनात्मक लेखन (क्रिएटिव राइटिंग) में *हम कुछ इस तरह लिखते हैं, जिस तरह हम सोचते हैं।*
उस समय नहीं, जब आपका मन शून्यवकाश में हो और दिमाग में कुछ न चल रहा हो, अपितु उस समय, जब मन अपनी गहराइयां नाप रहा हो। सोचिये जब आप अकेले हों, और गहन चिंतन में डूबें हों, शब्दों में, वाक्यों में, भाषा के परिमाणों का प्रयोग करके सोच रहे हों, या, रात में अपनी हॉस्टल की छत पर बैठ कर अपने किसी करीबी दोस्त से दुनिया कैसे चल रही है या और किसी दार्शनिक विषय पर हलकी लेकिन गहन चर्चा हो रही हो, अगर वो सब लेखनी बना कर लिख दिया जाए, तो वह होगा सृजनात्मक लेखन।
इंसान का दिमाग सृष्टि की सबसे जटिल रचनाओं में से एक है। यह सृजन की क्षमता रखता है, कुछ हटके करने की क्षमता रखता है। तथ्यों की लेखनी तो सुना है आजकल मशीनें भी करने लगी हैं किन्तु सृजन का उद्गम दिमाग है, मानस है।

इसमें भावनाएं शामिल हैं, कल्पनाएं शामिल हैं, आइडिया शामिल है, कलम से अपने दिलोदिमाग में मौजूदा विचारों को स्याही के रूप में रोना भी शामिल है। यह रहस्यों का विघटन भी है और हकीकत के पीछे का अध्यात्म भी है। सामाजिक मुद्दे, जो मन को विचलित कर दें, उन्हें अपनी लेखनी की हवा से दूसरे मन की खिड़की तक पहुंचना भी शामिल है।

संदर्भित लिंक
https://gyanapp.in/hindi/questions/1232/%E0%A4%B0%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%95-%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%96%E0%A4%A8-%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE-%E0%A4%B9%E0%A5%88